अभ्यास

प्रश्न 1. सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए :

(क) जाड़े के दिनों में किस प्रकार के वस्त्र पहनते हैं ?

(a) सूती वस्त्र (b) रेशमी वस्त्र

(c) ऊनी वस्त्र (d) नॉयलन वस्त्र **उत्तर–(c)**

प्रश्न 2. इनमें से कौन जन्तुओं से प्राप्त होते हैं ?

(a) सूती और ऊनी (b) ऊनी और रेशमी

(c) रेशमी और सूती (d) नॉयलन और सूती

उत्तर–(b)

प्रश्न 3. रेशम प्राप्त करने के लिए रेशम कीटों का पालन करना कहलाता है :

(a) फ्लोरीकल्चर (b) सिल्वी कल्चर

(c) एपीकल्चर (d) सेरीकल्चर **उत्तर**–(d)

प्रश्न 4. बेमेल शब्द पर घेरा लगाइए तथा चुनाव का कारण बतावें ।

(a) अभिमार्जन, बालों की कटाई, रीलिंग

(b) भेड़ लामा, रेशम कीट

(c) तसर, अंगोरा, पश्मीना

(d) सूत, ऊन, रेशम ।

उत्तर–(a) **रीलिंग**–अभिमार्जन और बालों की कटाई ऊन की तैयारी में होता है लेकिन रीलिंग, रेशम के रेशे निकालने से लेकर उनके धागे बनाने की प्रक्रिया रेशम की रीलिंग कहलाती है ।

(b) **रेशम कीट**–भेड़, लामाट से ऊन तैयार किया जाता है लेकिन रेशम कीट से रेशमी वस्त्र बनता है ।

(c) **तसर**–तसर रेशम की श्रेणी में आता है लेकिन अंगोरा और पश्मीना ऊन है ।

(d) **सूत**–सूत विनौले से बनता है लेकिन ऊन और रेशम जान्तव रेशे हैं । सूत वनस्पति रेशे हैं ।

प्रशन 5. हम अलग-अलग ऋतु में अलग-अलग प्रकार के कपड़े क्यों पहनते हैं ?

उत्तर– जाड़े की ऋतु में हम ऊनी कपड़े पहनना चाहते हैं, क्योंकि जाड़े में ठण्डक से बचने के लिए ऊनी कपड़े ही उपयुक्त हैं । ऊनी कपड़े पहनने पर ठण्डक असर नहीं करता है । गर्मी के ऋतु में सूती एवं उजले कपड़े पहनना अच्छा होता है । इससे हमें धूप का असर कम पड़ता है । सूती उज़ले कपड़े पहनकर धूप में चलने पर भी हमें गर्मी कम महसूस होता है, क्योंकि सूर्य की किरणों को सूती एवं उजला वस्त्र परावर्तित करता है ।

प्रश्न 6. उन प्रदान करने वाले जन्तुओं के शरीर पर बालों की मोटी परत क्यों होती है ?

उत्तर–बालों की मोटी परत ऊन प्रदान करने वाले जन्तुओं को ठन्डक से बचाती है । इनके घने बालों में वायु फँसी रहती है । वायु ताप का अचालक है । अतः घनी बाल जानवर के शरीर के ताप को बाहर नहीं आने देता है और न बाहर के ठण्डक को शरीर के अन्दर प्रवेश करने देता है । ऐसी अवस्था में जानवर अपनी सुरक्षा ठण्डक से कर लेता है ।

प्रश्न 7. कोकून को एक सही समय पर पानी में उबालना क्यों जरूरी है ?

उत्तर–कोकून से रेशम वस्त्र तक वयस्क कीट में विकसित होने से पहले ही कोकूनों को धूप या भाप में रखा जाता है अथवा पानी में उबाला जाता है ताकि रेशम के रेशे अलग हो जाए। रेशे निकालने से लेकर उनसे धागे बनाने की प्रक्रिया रेशम की रीलिंग कहलाती है ।

प्रश्न 8. रेशम कीट के जीवन-चक्र का एक रेखाचित्र बनाएँ ।

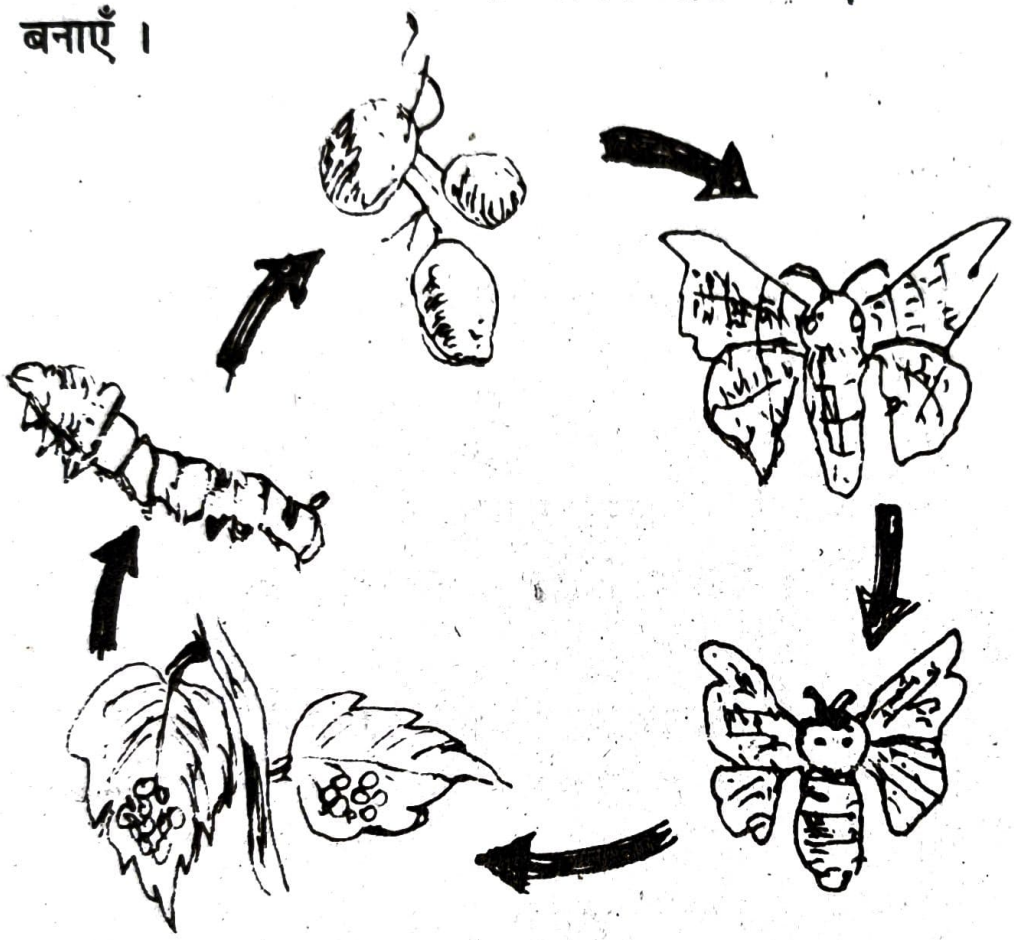

समान्यत: कीट के जीवन की चार अवस्थाएँ होती हैं । मादा रेशम कीट अंडे देती है जिनसे लार्वा निकलता है । लार्वा शहतूत की पत्ती को खाते रहते हैं और बड़े हो जाते हैं । लार्वा पतले तार के रूप में प्रोटीन से बना एक पदार्थ स्रावित करता है जो कठोर होकर रेशा बन जाता है। लार्वा इन रेशों से स्वयं को पूरी तरह से ढँक लेता है और अंदर ही अंदर परिवर्तित होते रहता है । यही आवरण कोकून कहलाता है । कीट का आगे का विकास कोकून के भीतर होता है । पूर्ण विकसित होने के पश्चात् कोकून तोड़कर कीट बाहर आता है । मादा कीट एक बार में सैकड़ों अंडे देती है ।